छोटी लाल मुर्गी

कैरन हेडॉक

एकलव्य

अहा !
गेहूँ के दाने!
मैं इसे खा लूँ...
या बो दूँ!

कौन करेगा मदद
इसको बोने में ?

मैं नहीं

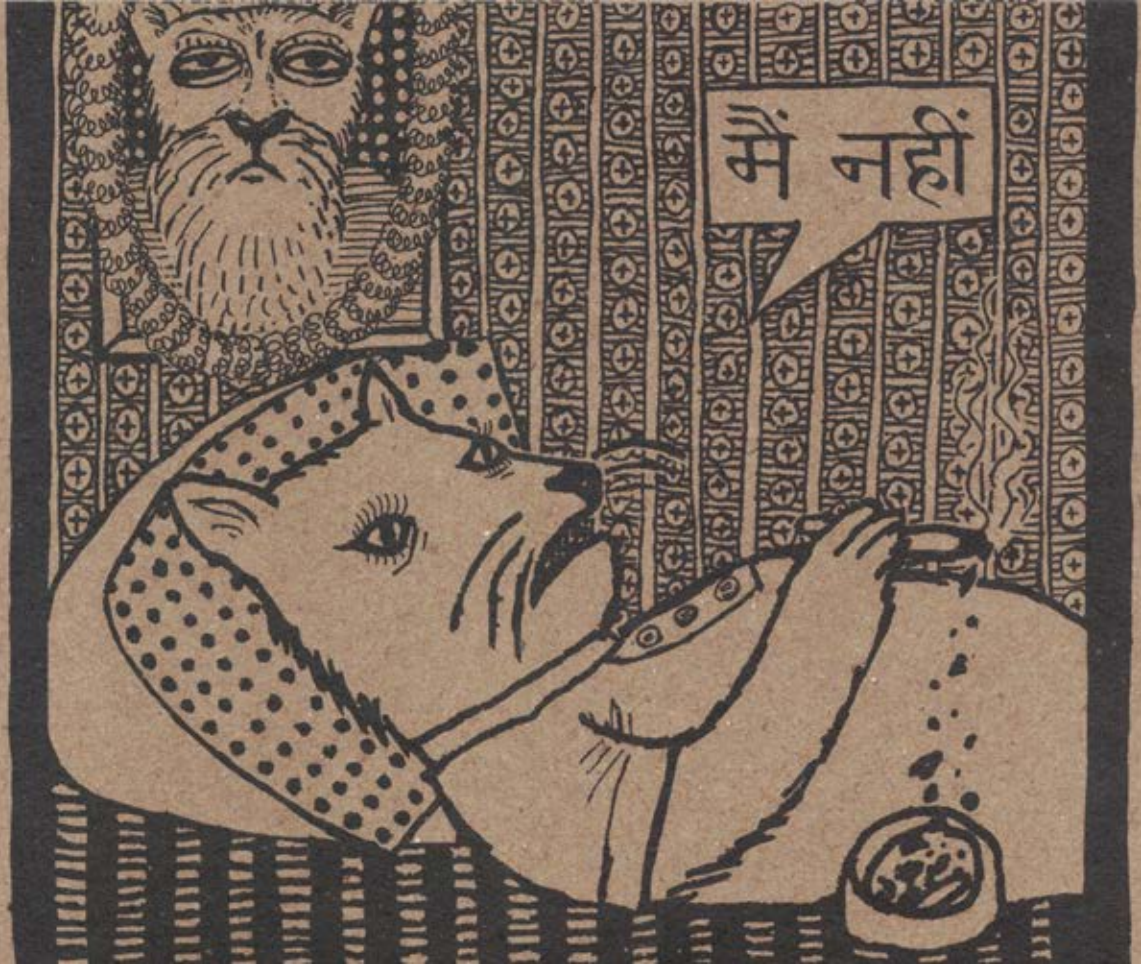
मैं नहीं

मैं नहीं

मैं नहीं

अच्छा मैं खुद ही बोऊँगी !

मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
कौन करेगा मदद
फसल काटने में?

अच्छा मैं
खुद ही
काटूँगी !

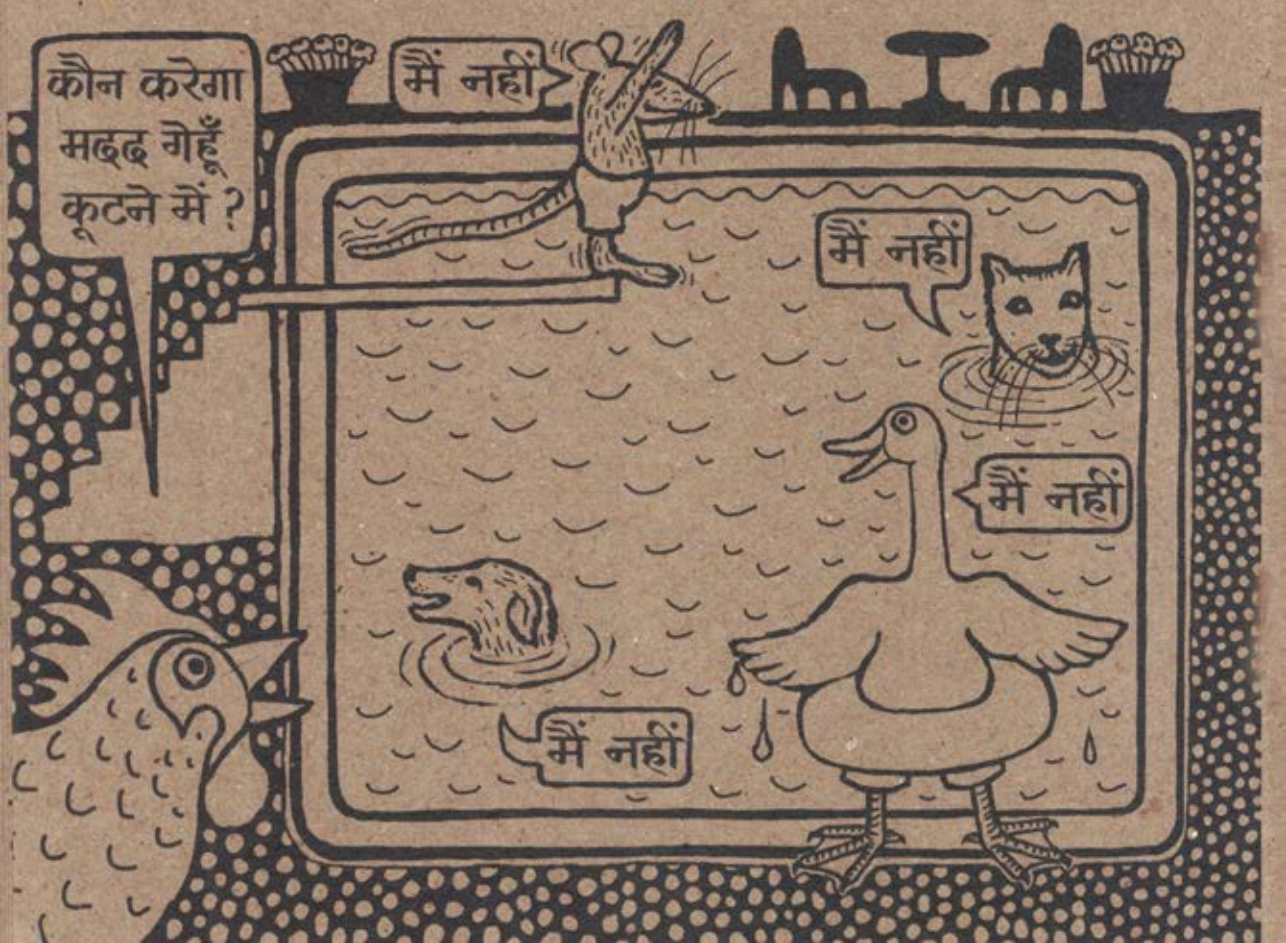
कौन करेगा मदद्द गेहूँ कूटने में ?
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं

अच्छा मैं खुद ही
कूट लूँगी!

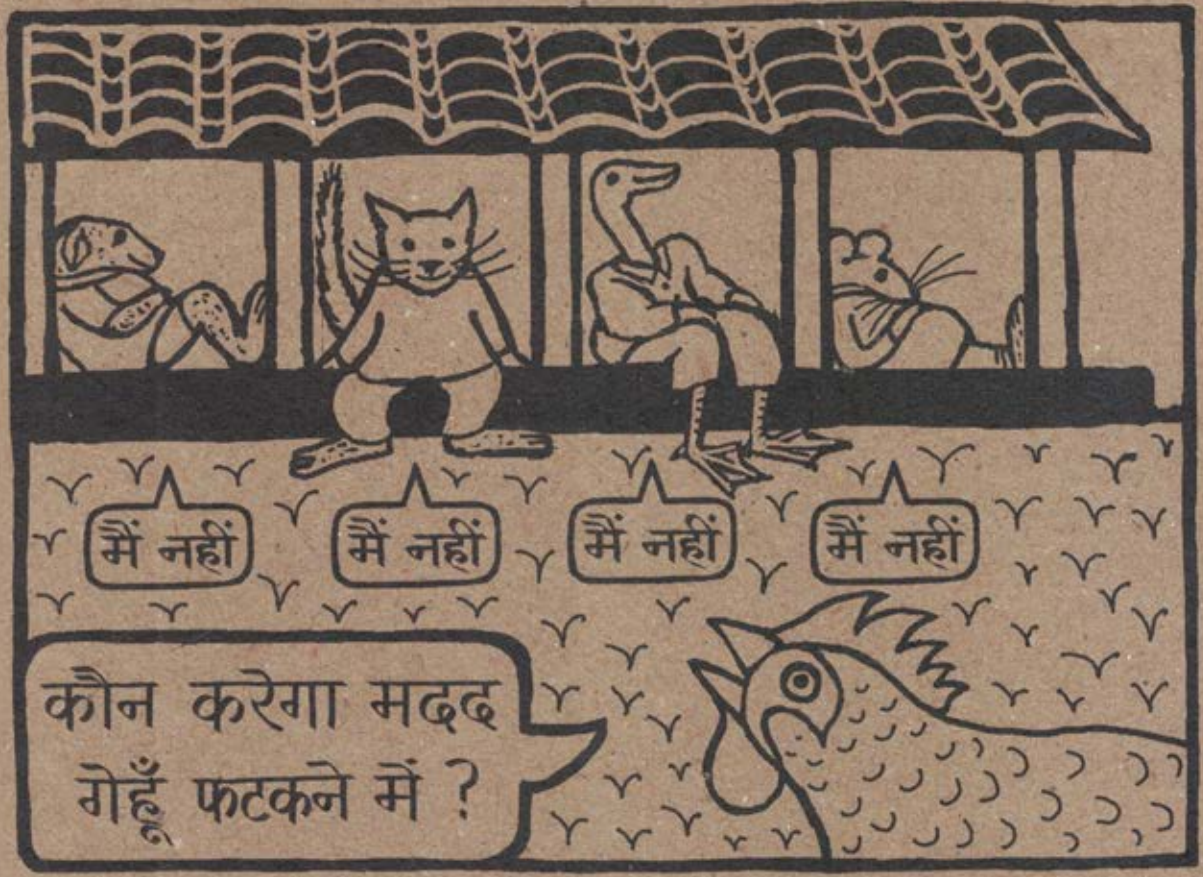
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
कौन करेगा मदद
गेहूँ फटकने में ?

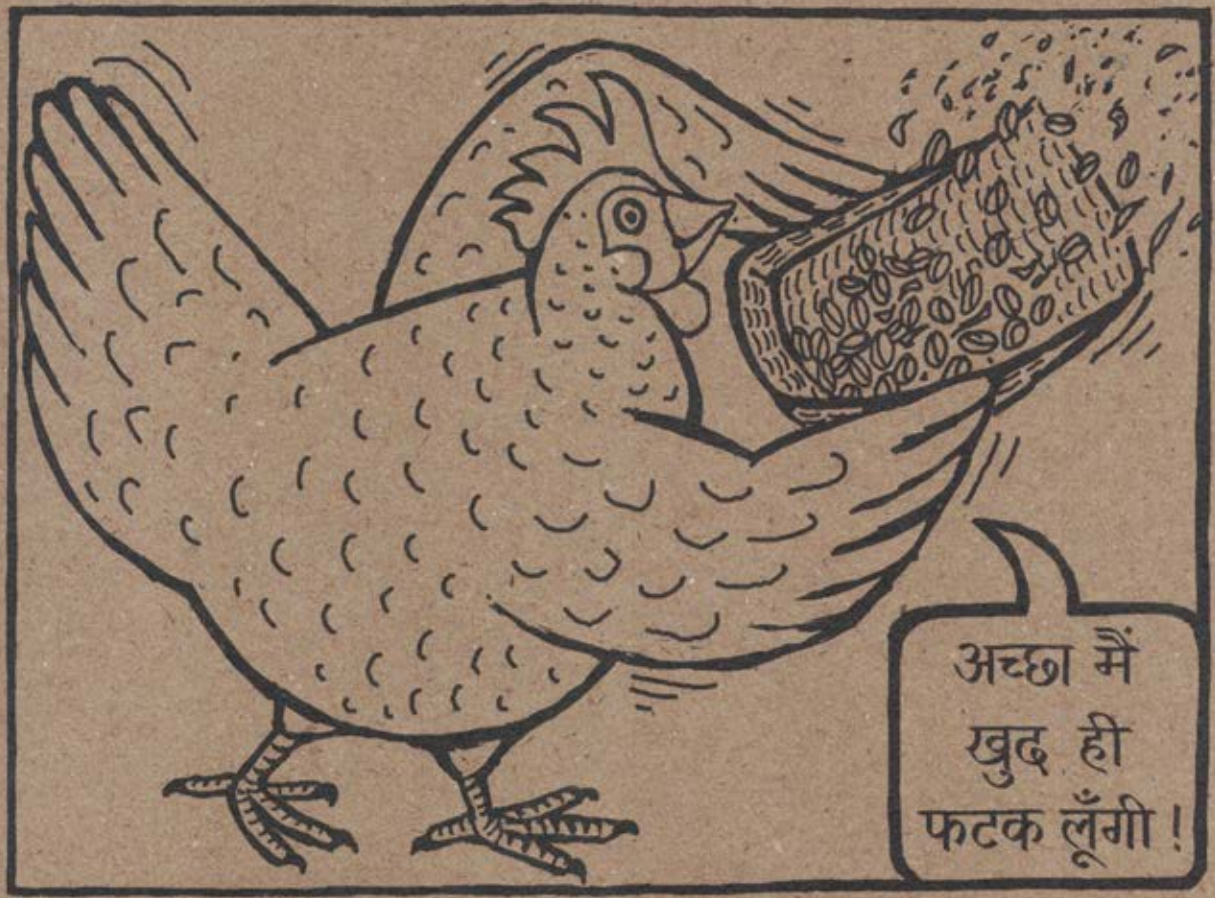
अच्छा मैं
खुद ही
फटक लूँगी !

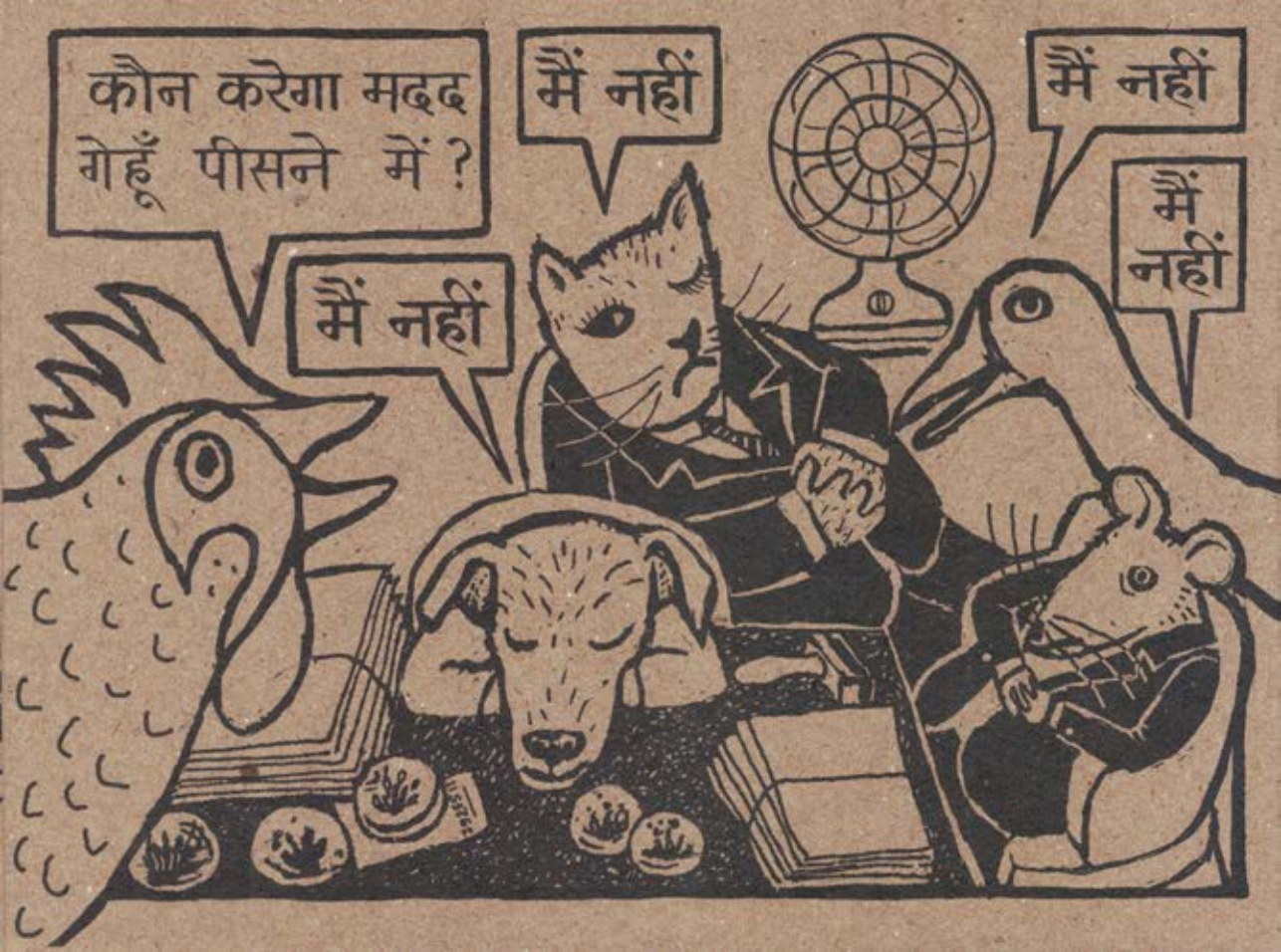
कौन करेगा मदद गेहूँ पीसने में ?
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं

अच्छा
मैं खुद
ही
पीसूँगी!

COST OF LIVING ▲ ENERGY
कौन करेगा मदद रोटी पकाने में ?
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं

अच्छा मैं खुद ही पकाऊँगी !

कौन करेगा मदद रोटी खाने में ?
मैं खाऊँगा!
मैं खाऊँगा!
मैं खाऊँगा!
मैं खाऊँगा!

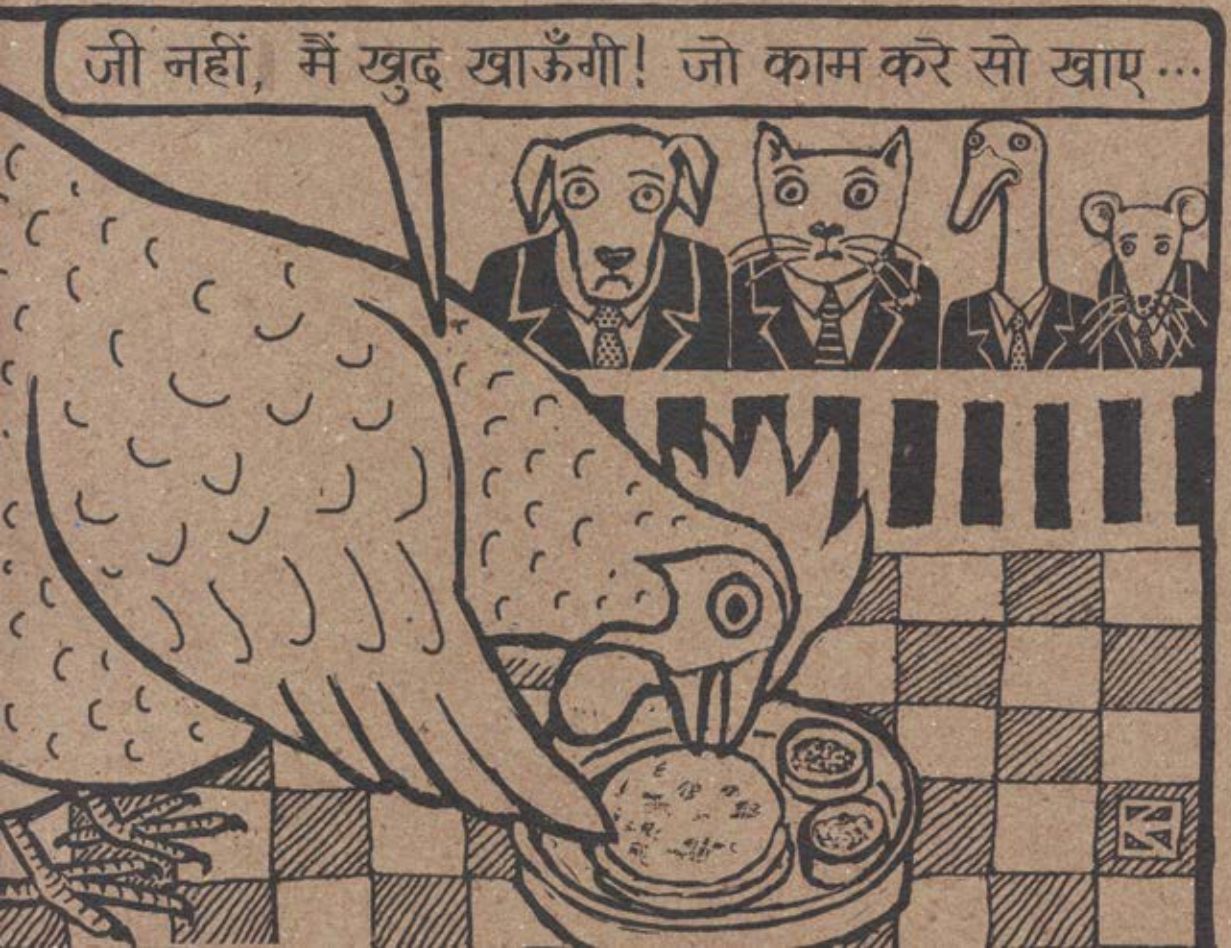
जी नहीं, मैं खुद खाऊँगी! जो काम करे सो खाए...

छोटी लाल मुर्गी / Chhoti Lal Murgi
कहानी व चित्र: कैरन हेडॉक
डिज़ाइन: कनक शशि

कैरन हेडॉक, नवम्बर 2015

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

नवम्बर 2015/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 140 gsm ब्राउन क्राफ्ट पेपर

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN:978-93-81337-77-6
मूल्य: ₹ 18.00

प्रकाशक: एककलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोन: +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in/books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, प्रा. लि., भोपाल (मप्र) +91 755 268 7589

अम्मा और अब्बा के लिए, जिन्होंने मुझे *छोटी लाल मुर्गी* की इस पुरानी लोककथा को पढ़ना सिखाया। ऐसा कहा जा सकता है कि इसी कारण मैंने लाल झण्डा हाथ में लिया ...

- कैरन हेडॉक

कैरन हेडॉक अमरीका में बायोफिज़िक्स में पीएचडी करने के बाद 1985 से भारत में कला, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक कहानियों की किताबों व पाठ्यपुस्तकों का लेखन और चित्रांकन किया है। आप उनकी वेबसाइट को यहाँ देख सकते हैं - www.haydock.com

कोई फ़सल बोता है। उसे सींचता है। रखवाली करता है। काटता है। छानकर तैयार करता है। और फसल कोई और ले जाता है। यह कहानी सड़क, मकान, ईंट, कपड़े, जूते, लोहा... बनाने वालों की भी है। घर की मुर्गी हमेशा दाल बराबर क्यों? इस कहानी की छोटी मुर्गी शायद इसीलिए लाल है।

कहानी शब्दों से ज़्यादा चित्रों में है। शब्दों में गेहूँ हैं पर खेत देखोगे तो चित्रों में मिलेगा।

एकलव्य
मूल्य: ₹ 18.00
parag
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के विशेष सहयोग से विकसित
9 789381 337776